

# डॉ. डेविड बाउर, आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन, व्याख्यान 15, मूल्यांकन और अनुप्रयोग

© 2024 डेविड बाउर और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड बाउर आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 15 है, मूल्यांकन और अनुप्रयोग।

परिच्छेद की व्याख्या के समापन पर अपने अनुमानों, विशिष्ट अनुमानों को एक पैराग्राफ में एक साथ लाना अच्छा है जो वास्तव में व्याख्या के केंद्र के रूप में कार्य करता है।

तो, 1:5 से 8 तक की हमारी व्याख्या से, यह हमारा सामान्य निष्कर्ष होगा। बुद्धि उस वास्तविकता के अर्थ को पूरी तरह और गहराई से जानने की क्षमता है जिसे भगवान ने मुख्य रूप से अपने शब्द के माध्यम से, बल्कि दुनिया के माध्यम से व्युत्पन्न किया है, और उस प्रक्रिया की समझ है जिसके द्वारा हम वास्तविकता के बारे में इस सही सोच को सही कार्रवाई में परिवर्तित करते हैं, और वास्तव में सही सोच को सही कार्य में लागू करने की क्षमता, इस प्रकार पूर्णता और एकता के जीवन का अनुभव करना, पीटर ने पूर्णता कहा, या जेम्स, मुझे कहना चाहिए, पूर्णता कहा गया, और वह जो अकेले भगवान को प्रसन्न कर सकता है, जो पूरी तरह से और पूरी तरह से एक है, देने की अपनी प्रतिबद्धता में एकीकृत। यह ज्ञान स्वयं ईश्वरीय दाता का एक दिव्य उपहार है, जो सामान्य रूप से मनुष्यों में मौजूद नहीं है, और किसी भी मानवीय या सांसारिक सहायता के आधार पर मनुष्यों के लिए संभव नहीं है, न ही यह ईसाई रूपांतरण का एक आवश्यक सहवर्ती है, लेकिन यह एक ईश्वरीय उपहार है ईसाइयों को पेश किया जाता है और इस प्रकार यह अपने स्वभाव में दिव्य और उत्कृष्ट है।

ज्ञान का यह उपहार विश्वास की प्रार्थना के माध्यम से सभी ईसाइयों के लिए स्वतंत्र रूप से उपलब्ध है, जो कि मांगने का एक सक्रिय और निरंतर तरीका है, जिसमें गहरा विश्वास शामिल है कि यह अकेले भगवान से आता है और यह एक ऐसे भगवान से आता है जो अपने आप में एक है। सभी व्यक्तियों को अच्छे और केवल अच्छे उपहार देने की पूर्ण इच्छा। बुद्धि वास्तविकता को जानने और इस वास्तविकता को जीवन के अवतार में व्यक्त करने की क्षमता, समझ और क्षमता है, अर्थात् सही कार्य; जेम्स 1:5 में विशेष रूप से उनके भीतर निहित परीक्षणों और प्रलोभनों से संबंधित है, लेकिन यह आम तौर पर हर मानवीय स्थिति से भी संबंधित है। मुझे आशा है कि यह स्पष्ट है कि हम अपने अनुमानों के विभिन्न विशिष्ट पहलुओं को इस समग्र सामान्य निष्कर्ष में कैसे लाए।

अब, हम अवलोकन और व्याख्या के बारे में बात कर रहे हैं। अब हमें संक्षेप में मूल्यांकन और अनुप्रयोग के संबंध में कुछ कहना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि, हम जिस व्याख्या के साथ आए हैं उसकी सच्चाई के किन पहलुओं को सीधे तौर पर हमारे जीवन में लागू किया जा सकता है, और यह भी कि हम इस सच्चाई या इन सच्चाइयों को अपने जीवन में कैसे लागू कर सकते हैं।

मूल्यांकन और अनुप्रयोग के लिए मूलतः यही हमारे मन में है। इसलिए, जैसा कि मैं कहता हूँ, विशिष्ट प्रक्रिया के संदर्भ में, हम अपनी व्याख्या से पहचानना चाहते हैं, वास्तव में वह पैराग्राफ जो हमारी व्याख्या से एक सामान्य निष्कर्ष है, उसमें से अनुच्छेद के विशिष्ट शिक्षण या शिक्षाओं की पहचान करें और इस शिक्षण को संक्षेप में स्पष्ट करें अनुच्छेद, जो हमने किया है, और नीचे चर्चा किए जाने वाले साक्ष्य के आधार पर, यह निर्धारित करें कि क्या इस अनुच्छेद की विशिष्ट शिक्षा या शिक्षा पारलौकिक है, अर्थात्, समय पर उचित रूप से लागू होती है और इसमें हमारा अपना भी शामिल है, या स्थिति-बद्ध है, कि मूल स्थिति से इतना बंधा हुआ है कि वर्तमान समय में ठीक से लागू नहीं हो सकता। यदि आप पाते हैं कि परिच्छेद की शिक्षा या शिक्षा स्थिति-आधारित है, तो उस शिक्षण से निहितार्थ, धारणाएं और परिणाम दोनों को समझाना महत्वपूर्ण है, जो वास्तव में, उत्कृष्ट हो सकता है।

अब, मैं मूल्यांकन और अनुप्रयोग के संबंध में कुछ कहना चाहूंगा। अधिक उचित मूल्यांकन के संदर्भ में, मूल्यांकन वास्तव में यह सुनिश्चित करने से संबंधित है कि कौन सी शिक्षाएँ या आपकी व्याख्या की शिक्षा के कौन से पहलू स्थिति-बद्ध हैं और कौन से पारलौकिक हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि, क्या शिक्षण या शिक्षाएँ या आपकी व्याख्या से शिक्षण के पहलू इस अर्थ में स्थिति-बद्ध हैं कि वे उस मूल स्थिति से इतने बंधे हुए हैं जिसमें उन्हें संप्रेषित किया गया था कि उन्हें वैध रूप से नहीं लिया जा सकता था और सीधे लागू नहीं किया जा सकता था। अन्य समयों में और हमारे स्वयं सहित अन्य स्थानों में, या क्या वे पारलौकिक हैं, अर्थात्, मूल स्थिति से इतने बंधे नहीं हैं कि उन्हें उठाया और सीधे लागू नहीं किया जा सकता है, लेकिन अन्य समयों और अन्य में वैध रूप से सीधे लागू होते हैं जगहें, जिनमें हमारी अपनी जगहें भी शामिल हैं।

अधिकांश बाइबिल विद्वान बाइबिल मूल्यांकन के बारे में आमतौर पर इसी तरह बात करते हैं। इसका संबंध वास्तव में किसी व्याख्या किए गए अनुच्छेद की सत्यता को लागू करने की उपयुक्तता या वैधता, उपयुक्तता या वैधता से है। लेकिन वास्तव में, मूल्यांकन के अन्य पहलू भी हैं।

मूल्यांकन का एक अन्य पहलू वास्तव में बल और अनुप्रयोग के दायरे से संबंधित है। अनुप्रयोग की शक्ति के संदर्भ में, भले ही किसी शिक्षण को उत्कृष्ट माना जाता है, यह मूल स्थिति से इतना बंधा हुआ नहीं है कि इसे अन्य समय और अन्य स्थानों पर सीधे लागू नहीं किया जा सकता है। यहां तक कि उत्कृष्ट प्रकार के शिक्षण के लिए भी, हमें उस शिक्षण का मूल्यांकन उसकी शक्ति के संदर्भ में करने की आवश्यकता है। क्या इसे एक पूर्ण आवश्यकता के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, या तो सोचने के लिए या कार्य करने के लिए, एक पूर्ण आवश्यकता, या कुछ ऐसा जिसकी अनुशंसा की जाती है, यहां तक कि शायद दृढ़ता से अनुशंसित, या बस एक सामरिक सुझाव, कुछ परिस्थितियों में एक अच्छा विचार, प्रयोज्यता का बल, लेकिन साथ ही प्रयोज्यता का दायरा?

कहने का तात्पर्य यह है कि, मूल्यांकन यह भी सुनिश्चित करने का प्रयास करता है कि क्या इस मार्ग की शिक्षा सभी व्यक्तियों पर उचित रूप से लागू होती है या क्या यह केवल कुछ व्यक्तियों पर लागू होती है, मान लीजिए, केवल चर्च के भीतर के नेताओं पर। रियायत की डिग्री का भी मुद्दा है। कहने का तात्पर्य यह है कि, क्या इस अनुच्छेद की शिक्षा एक सत्य प्रस्तुत करती है जिसमें

एक प्रकार की दैवीय रियायत शामिल है? कहने का तात्पर्य यह है कि, ईश्वर का आदर्श इससे कहीं अधिक कुछ होगा, लेकिन यह परिच्छेद इंगित करता है कि यह सोच या व्यवहार का एक स्तर है जिसके साथ ईश्वर रहने के लिए तैयार है, जिसे ईश्वर आदर्श के विरुद्ध स्वीकार करता है।

या क्या परिच्छेद इस सुझाव के साथ एक आदर्श प्रस्तुत करता है कि कुछ हद तक रियायत स्वीकार की जाती है? अब, वास्तव में, यह सब उस चीज़ से संबंधित है जिसे हम बाइबिल मूल्यांकन कहते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि, बाइबिल की सच्चाई का मूल्यांकन प्रयोज्यता की उपयुक्तता या वैधता, प्रयोज्यता की शक्ति, प्रयोज्यता के दायरे और प्रयोज्यता की रियायत की डिग्री के संदर्भ में किया जाता है। एक पल के लिए इस पर वापस आते हैं, प्रयोज्यता की रियायत की डिग्री के इस व्यवसाय पर, कुछ उदाहरण।

एक ऐसे अनुच्छेद के संदर्भ में जहां आपको एक प्रकार की दैवीय रियायत मिलती है जो आदर्श से कम है, मुझे लगता है कि यहां एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंश सीरियाई जनरल नामान की कहानी है, जो 2 राजाओं 5 से संबंधित है। आपको याद है कि यह आदमी था वह एक कोढ़ी है, और वह उपचार के लिये एलीशा के पास आता है। और वास्तव में, वह जॉर्डन नदी में ठीक हो गया है। और वह कोढ़ से शुद्ध होने के लिए इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का बहुत आभारी है।

और वह बनना चाहता है, और वास्तव में, यहोवा, सच्चे परमेश्वर, एकमात्र सच्चे परमेश्वर का उपासक बन गया है। फिर भी वह मुश्किल स्थिति में है। वास्तव में, उसकी ज़िम्मेदारी सीरिया के राजा को पूजा के लिए देवता रिमोन के घर में ले जाने और शायद सहायता करने की है।

और यदि वह रिमोन के घर में प्रवेश करता और पूजा में नहीं झुकता तो यह मौत की सज़ा का विषय होता। इसलिए, वह पैगंबर से रियायत की याचना करता है या प्रार्थना करता है यदि, वास्तव में, यह इज़राइल के भगवान को स्वीकार्य होगा यदि, वास्तव में, उसने इस मान्यता के साथ घुटने टेके कि उसके दिल में वह वास्तव में रिमोन की पूजा नहीं कर रहा था। यह स्पष्टतः ईश्वर के नियम का तकनीकी उल्लंघन है।

यह किसी स्तर पर ईश्वर की इच्छा का उल्लंघन है। और फिर भी ईश्वर, भविष्यवक्ता के माध्यम से, नामान को अपनी रियायत देता है। इसलिए, यह कहने की बात नहीं है कि इस प्रकार की चीज़ हमेशा ठीक होती है या यह ईश्वर की इच्छा का प्रतिनिधित्व करती है।

यह ईश्वर की इच्छा का प्रतिनिधित्व नहीं करता है। यह ईश्वर के आदर्श का प्रतिनिधित्व नहीं करता। लेकिन यह दर्शाता है कि ईश्वर इस प्रकार की आधिकारिक आवश्यकताओं को स्वीकार करने के लिए तैयार है, कम से कम ऐसे मामलों में।

दूसरी ओर, 1 कुरिन्थियों 7 के मामले में, पॉल ब्रह्मचर्य का आदर्श प्रस्तुत करता है। वह कहते हैं, एक आदमी के लिए यह बेहतर है कि वह शादी न करे। यह बेहतर है, क्योंकि मैं चाहता हूँ कि सब कुछ वैसा ही रहे जैसा मैं हूँ, पॉल कहते हैं।

और फिर भी वह स्पष्ट रूप से वहां रियायत का संकेत देता है। लेकिन उनका कहना है कि असल में हार्मोन, रेजिंग हार्मोन जैसी कोई चीज़ होती है। और एक आदमी के लिए वासना में जलने से बेहतर है कि वह शादी कर ले।

वहाँ आपके सामने रियायत के साथ-साथ आदर्श भी प्रस्तुत है। पॉल का मानना है कि इस स्थिति में ईश्वरीय आदर्श ब्रह्मचर्य है, लेकिन वहां रियायत का संकेत दिया गया है। अब, मूल्यांकन का बुनियादी स्तर किस प्रकार का है, और वह प्रयोज्यता की उपयुक्तता या वैधता है, बाइबल में वास्तव में आपके पास जो कुछ है उसे हम अतिक्रमण की निरंतरता के रूप में संदर्भित कर सकते हैं।

सातत्य के एक छोर पर, हमारे पास ऐसे अंश हैं, ठीक है, हम मैथ्यू 22:34 से 40 तक कह सकते हैं। मैथ्यू 22:34 से 40। आपको यह अनुच्छेद याद है।

वकील ने यीशु से पूछा, कानून में सबसे बड़ी आज्ञा क्या है? तुम अपने परमेश्वर यहोवा से अपने पूरे हृदय, मन, आत्मा और शक्ति से प्रेम करो। यह पहली और महान आज्ञा है। दूसरा इसके समान है, तुम अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो। इन दो आज्ञाओं पर, सभी कानून और भविष्यवक्ताओं को लटकाओ या निर्भर रहो।

हम एक क्षण में यह बताने के लिए वापस आने वाले हैं कि हम क्यों मानते हैं कि वास्तव में, यह एक उत्कृष्ट शिक्षा है जो सीधे हमारे समय और अन्य स्थानों पर भी लागू होती है। सातत्य के दूसरे छोर पर, आपके पास 1 तीमुथियुस 5, श्लोक 23 जैसे अंश हैं, जहां पॉल तीमुथियुस को सलाह देता है कि वह अब पानी न पिए, बल्कि अपने पेट और अपनी बार-बार होने वाली बीमारियों के लिए थोड़ी सी शराब ले।

यह, कम से कम सतही तौर पर, हमें स्थिति-बद्ध शिक्षा प्रतीत होती है। मुद्दा वास्तव में इस बात से संबंधित है कि क्या किसी परिच्छेद की शिक्षा, क्या किसी परिच्छेद की हमारी व्याख्या में एक ऐसा शिक्षण शामिल है जो सीधे तौर पर एक अधिक मौलिक सत्य को व्यक्त करता है, जो कि इसके संदर्भ में और एक व्यापक बाइबिल परिप्रेक्ष्य के अनुसार अधिक मौलिक है। इसके सन्दर्भ में परिच्छेद के आधार पर और समग्र रूप से बाइबिल के सन्दर्भ के आधार पर, हम इस प्रश्न का उत्तर देते हैं कि क्या यह शिक्षण सीधे तौर पर एक अधिक मौलिक सत्य को व्यक्त करता है जो उस मूल स्थिति से परे है जिसमें इसे संबोधित किया गया था, अर्थात्, अनिवार्य रूप से पारलौकिक है, और इस प्रकार वैध रूप से अन्य समय और अन्य स्थानों में विनियोजित किया जा सकता है, जिसमें हमारा अपना भी शामिल है, मूल स्थिति के आसपास की परिस्थितियों द्वारा बड़े पैमाने पर आकार या निर्धारित होने के बजाय, अर्थात्, परिस्थितिजन्य रूप से आकस्मिक, अनिवार्य रूप से पारलौकिक या परिस्थितिजन्य रूप से आकस्मिक।

यह निर्णय विशेष रूप से इसके संदर्भ में अनुच्छेद के अनुसार और व्यापक बाइबिल परिप्रेक्ष्य के अनुसार किया जाता है। अब, मत्ती 22, 34 से 40 के मामले में, आपको अपने परमेश्वर यहोवा से अपने पूरे हृदय, मन, आत्मा और शक्ति से और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना चाहिए।

संदर्भ वास्तव में इंगित करता है कि यह व्यापक प्रयोज्यता की अनुमति देता है और यह स्थिति-बद्ध नहीं है। वकील कानून में व्यक्त ईश्वर की इच्छा के संबंध में प्रश्न पूछता है।

इसका संबंध इस बात से है कि ईश्वर की इच्छा के सूचकांक के संदर्भ में कानून का केंद्र क्या है। यह किसी विशेष स्थिति के तात्कालिक संदर्भ तक सीमित नहीं है। तात्कालिक संदर्भ इसे यथासंभव व्यापक शब्दों में प्रस्तुत करता है।

और, निस्संदेह, बाइबिल के बाकी हिस्सों में, इसे नए नियम में बार-बार इसी तरह प्रस्तुत किया गया है, न कि केवल मैथ्यू 22 में। दोहरे प्रेम आदेश को भगवान की इच्छा के केंद्र के रूप में देखा जाता है। और वास्तव में, यह प्रोत्साहित किया जाता है कि इस दोहरे प्रेम आदेश को जीवन की विभिन्न स्थितियों में लागू किया जाए।

अब, 1 तीमोथियुस 5:23 के संबंध में, हालाँकि, यहाँ हम ध्यान देते हैं कि तात्कालिक संदर्भ एक स्थिति-बद्ध स्थिति का सुझाव देता है। अपने पेट और बार-बार होने वाली बीमारियों के इलाज के लिए अब पानी न पिएं, बल्कि थोड़ी सी शराब पिएं। तो, एक बात के लिए, यह टिमोथी की विशेष स्वास्थ्य स्थिति पर निर्भर हो जाता है।

निःसंदेह, यह तात्कालिक संदर्भ से सुझाया गया है। और, निःसंदेह, व्यापक बाइबिल परिप्रेक्ष्य में, बाइबिल में कहीं भी पानी वर्जित नहीं है। क्या पानी पीना या शराब पीना वर्जित है, इत्यादि?

तो, उस आधार पर, फिर से, ऐसा लगता है कि यह एक परिस्थितिजन्य आकस्मिक प्रकार का शिक्षण है। अब, निस्संदेह, यह सच है, जैसा कि मैं कहता हूँ, यहां एक सातत्य है, जिसका अर्थ है कि आपके पास कई, कई मार्ग हैं, शायद अधिकांश मार्ग, इस सातत्य के चरम के बीच में कहीं स्थित हैं। इसमें आम तौर पर किसी अनुच्छेद के शिक्षण के कुछ पहलू स्थिति-बद्ध होते हैं और उस शिक्षण के अन्य पहलू पारलौकिक होते हैं।

लेकिन फिर भी, संक्षेप में, यह बाइबिल आधारित मूल्यांकन का कार्य है। अब, निःसंदेह, कुछ अंश ऐसे हैं जिन्हें आप नहीं ले सकते और यदि आप चाहें तो सीधे लागू नहीं कर सकते। उदाहरण के तौर पर व्यवस्थाविवरण 18:6 को लीजिए, और यदि कोई लेवी तेरे किसी नगर में से, जहां वह रहता है, सारे इस्राएल में से आए, तो वह जब चाहे तब उस स्थान पर, जो यहोवा चुन ले, आ सके, कि उस नाम से सेवा करे। उसके परमेश्वर यहोवा की ओर से, उसके सब संगी लेवियों के समान, जो वहां यहोवा के साम्हने सेवा टहल करने के लिये खड़े होते हैं, उनको खाने के लिये बराबर भाग दिया जाए, इसके अलावा जो कुछ वह अपनी विरासत की बिक्री से प्राप्त करता है।

अब, निस्संदेह, हमारे पास लेवी नहीं हैं। अब हमारे पास कोई केंद्रीय मंदिर नहीं है। इसलिए, जैसा कि मैं कहता हूँ, यह एक प्रकार की शिक्षा है जिसे अपनाया नहीं जा सकता है और सीधे लागू नहीं किया जा सकता है, भले ही किसी ने ऐसा करने का प्रयास किया हो, ऐसा करने का प्रयास किया हो। अब, मैंने उल्लेख किया है कि, वास्तव में, बाइबिल मूल्यांकन के संबंध में निर्णय साक्ष्य पर आधारित होना चाहिए।

और, निःसंदेह, यह आश्चर्य की बात नहीं है, यह देखते हुए कि हम आगमनात्मक दृष्टिकोण के अनुसार काम कर रहे हैं। यह केवल कहने की बात नहीं है, लगभग सहज रूप से, यह उस तरह की चीज़ नहीं लगती है जिसे उठाया जा सके और सीधे लागू किया जा सके, या यह उस तरह की चीज़ प्रतीत होती है जिसे हम उठा सकते हैं और सीधे लागू कर सकते हैं। हमें वास्तव में साक्ष्य और विशेष रूप से बाइबिल के साक्ष्य के आधार पर निर्णय लेने की आवश्यकता है, न केवल प्रयोज्यता की वैधता के संबंध में बल्कि बल, दायरे और प्रयोज्यता की रियायत की डिग्री के संबंध में भी।

और विशेष रूप से दो प्रकार के बाइबिल साक्ष्य हैं जो इस बाइबिल मूल्यांकन को करने के लिए प्रासंगिक हैं। पहला है संदर्भ. और यहां, मैं केवल कुछ उदाहरण देना चाहता हूं।

फिर, मुझे लगता है कि उदाहरण सबसे अधिक सहायक होते हैं जो प्रयोज्यता के बारे में निर्णय लेने के लिए प्रासंगिक साक्ष्य के उपयोग को दर्शाते हैं। मैथ्यू में, अध्याय 16, श्लोक 20, और, एक बार फिर, यदि आपके पास बाइबिल है और बाइबिल होनी चाहिए, तो उन्हें खोलना अच्छा है। मेरे डॉक्टरेट अध्ययन में वर्जीनिया में यूनिवर्सिटी थियोलॉजिकल सेमिनरी में मेरे प्रोफेसरों में से एक पॉल अक्टेमेयर थे, और उन्होंने एक अवसर पर कहा था, कि बाइबल के बिना बाइबल अध्ययन करना गेंद के बिना टेनिस खेलने जैसा है।

और इसलिए, बाइबल को हमेशा खुला रखना वास्तव में काफी महत्वपूर्ण है। लेकिन यदि आप मत्ती 16:20 को देखें, तो हम वहां पढ़ते हैं कि यीशु ने उन्हें आदेश दिया कि वे किसी को यह न बताएं कि वह मसीह है। अब, यह यीशु अपने शिष्यों से कहते हैं।

यह वह प्रभार है जो वह अपने शिष्यों को देता है। मैथ्यू के सुसमाचार में, निस्संदेह, ईसाई शिष्य हैं, और कई मायनों में, मैथ्यू के सुसमाचार में बारह शिष्य ईस्टर के बाद के ईसाइयों के प्रतिनिधि हैं। तो, इससे एक प्रश्न उठता है कि क्या यीशु द्वारा अपने शिष्यों पर लगाए गए इस आरोप को सीधे तौर पर लागू किया जा सकता है? किसी को यह मत बताना कि यीशु मसीह है।

उसके मसीहापन को गुप्त रखो। खैर, उत्तर, निश्चित रूप से, स्पष्ट रूप से नहीं है। यह स्पष्ट रूप से स्थिति-बद्ध है।

लेकिन हमें कैसे पता चलेगा कि यह है? हम इसे मैथ्यू के सुसमाचार के व्यापक संदर्भ के आधार पर जानते हैं। मैथ्यू का सुसमाचार मैथ्यू 28:18 से 20 तक महान आयोग में चरमोत्कर्ष पर आता है, जहां शिष्यों को आदेश दिया जाता है, जाओ और सभी देशों के लोगों को शिष्य बनाओ, उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा दो, उन्हें सिखाओ। जो कुछ मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है उन सब का पालन करना। मैथ्यू 28:20 में शिष्य बनाने की व्याख्या से यह स्पष्ट हो जाता है कि शिष्यों के निर्माण का वह हिस्सा, और तथ्य के रूप में केंद्रीय बात, मसीहापन, यीशु के ईसाई धर्म की घोषणा कर रही है।

वैसे, मैथ्यू का एक और उदाहरण, जो काफी दिलचस्प है, मैथ्यू 10, छंद 5 और 6 में है। यीशु ने वहां अपने शिष्यों को आदेश दिया, अन्यजातियों के बीच कहीं मत जाओ, और सामरियों के

किसी शहर में प्रवेश मत करो, बल्कि केवल खोए हुए लोगों के पास जाओ। इस्राएल के घराने की भेड़ें। अब फिर, क्या यह ऐसी चीज़ है जिसे उठाया जा सकता है और सीधे लागू किया जा सकता है? नहीं, फिर से, व्यापक पुस्तक संदर्भ के कारण, और फिर, आंशिक रूप से, अध्याय 28 के अंत में सुसमाचार के चरमोत्कर्ष के कारण। जाओ और सभी राष्ट्रों को शिष्य बनाओ।

वैसे, यह एक ऐसा शब्द है जिसका अनुवाद सभी अन्यजातियों द्वारा किया जा सकता है। इसमें निश्चित रूप से अन्यजाति भी शामिल हैं। ताकि महान आयोग, वास्तव में, मैथ्यू के सुसमाचार का चरमोत्कर्ष, मैथ्यू 10:5, और 6 में उस आरोप का प्रतिपादन करे। अन्यजातियों के बीच कहीं न जाएं, सामरियों के किसी शहर में प्रवेश न करें, उस स्थिति को बाध्य करता है।

यह यीशु के सांसारिक मंत्रालय के दौरान बारह शिष्यों के लिए उपयुक्त था, लेकिन अब पुनरुत्थान के इस तरफ रहने वाले ईसाइयों के लिए उपयुक्त नहीं है, अब लागू नहीं है। दूसरी ओर, आपके पास रोमियों 1, 18 से 36 तक, समलैंगिक व्यवहार के विरुद्ध नए नियम में सबसे स्पष्ट कथन है। और यह मार्ग, आप जानते हैं, हाल के वर्षों में विवाद का एक तूफान केंद्र बन गया है।

अधिकांश भाग के लिए, रोमियों 1:18 से 36 के संबंध में विवाद में परिच्छेद की व्याख्या शामिल नहीं है। यह बिल्कुल स्पष्ट प्रतीत होता है, कम से कम बड़े पैमाने पर, लेकिन इसमें विशेष रूप से इसका मूल्यांकन शामिल है। क्या इसे उठाया जा सकता है और सीधे लागू किया जा सकता है? अन्य समयों और अन्य स्थानों में, जिनमें हमारा अपना समय भी शामिल है।

अब, यह दावा कभी-कभी किया जाता है कि यह स्थिति-बद्ध है क्योंकि इसका संबंध विशेष रूप से पकड़े गए वेश्यावृत्ति, पुरुष द्वारा पकड़े गए वेश्यावृत्ति से है। यह वास्तव में बुतपरस्त मूर्तिपूजा के विरुद्ध एक तर्क है और समलैंगिक संबंधों के विरुद्ध एक तर्क है। लेकिन तात्कालिक संदर्भ, कम से कम तात्कालिक संदर्भ के साक्ष्य के संदर्भ में, स्थिति-बद्ध होने के संबंध में उस तरह के निर्णय की अनुमति नहीं देगा, मेरे अनुमान में, क्योंकि पॉल जड़ें, यदि आप पॉल द्वारा दिए गए तर्क को देखें, तो पॉल सृष्टि में समलैंगिक व्यवहार और सृष्टि के क्रम पर उनकी आपत्तियाँ निहित हैं।

जहां तक उसका सवाल है, यह वास्तव में सृष्टिकर्ता के विरुद्ध उल्लंघन या पाप है, सृष्टिकर्ता ईश्वर की संप्रभुता का खंडन है। जहाँ तक यह मामला है, इसे एक उत्कृष्ट शिक्षा माना जाएगा जो तब तक लागू रहती है जब तक सृष्टि जारी है। अब, एक और उदाहरण, एक अन्य प्रकार का साक्ष्य, हमने जो किया है वह निर्णय लेने के लिए संदर्भ से साक्ष्य उद्धृत करना है।

एक अन्य प्रकार का साक्ष्य धर्मग्रंथों की गवाही से प्राप्त साक्ष्य, व्यापक बाइबिल परिप्रेक्ष्य और धर्मग्रंथों से प्राप्त साक्ष्य हैं। यदि आप निर्गमन अध्याय 21, छंद 23 और 24, निर्गमन 21:23, और 24 को देखते हैं, तो यदि कोई नुकसान होता है, तो आपको जीवन के बदले जीवन, आंख के बदले आंख, दांत के बदले दांत, हाथ के बदले हाथ, पैर के बदले पैर देना होगा। जलने की जगह जलाना, घाव की जगह घाव, पट्टी की जगह पट्टी। आंख के बदले आंख और दांत के बदले दांत प्रसिद्ध है।

लेकिन यीशु, मैथ्यू अध्याय 5, श्लोक 38 में, पहाड़ी उपदेश में कहते हैं, तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, आंख के बदले आंख और दांत के बदले दांत। परन्तु मैं तुम से कहता हूं, जो दुष्ट है उसका विरोध न करो। परन्तु यदि कोई तुम्हारे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, तो दूसरा भी उसकी ओर कर दो।

और यदि कोई तुम पर मुकदमा करके तुम्हारा कोट लेना चाहे, तो उसे तुम्हारा कपड़ा भी ले लेने दो। और यदि कोई तुम्हें एक मील जाने के लिए मजबूर करता है, तो उसके साथ दो मील जाओ, आदि। तो यहाँ यीशु कहते हैं, स्पष्ट रूप से कहते हैं, कि निर्गमन 21 में कानून की यह आज्ञा अब सीधे लागू नहीं होती है।

यह अब उन शर्तों पर लागू नहीं है जिनमें यह कहा गया था, अब सीधे तौर पर लागू नहीं है। तुम सुन चुके हो कि यह कहा गया था; वह इसे उद्धृत करता है, लेकिन इसके विपरीत, मैं आपसे कहता हूँ।

तो यहां आपके पास एक ऐसा मामला है जहां धर्मग्रंथों की गवाही, और विशेष रूप से जिसे हम पुराने नियम से नए नियम तक रहस्योद्घाटन की प्रगति कहते हैं, जो कि धर्मग्रंथों की गवाही का एक रूप है, इंगित या प्रस्तुत करता है, मुझे कहना चाहिए, निर्गमन 21-24 से यह शिक्षण स्थिति बाध्य. उपयुक्त, ईसा मसीह के आने से पहले इसराइल के लिए वैध, लेकिन अब हमारे प्रभु के शिष्यों पर सीधे तौर पर लागू नहीं है। अब, यहां यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि स्थिति-बाध्य शिक्षाएं, या स्थिति-बाध्य मार्ग भी प्रासंगिक हो सकते हैं।

इससे यह सवाल उठता है कि क्या बाइबल में बोलने के लिए कोई अनुच्छेद हैं या बहुत से, यहाँ तक कि बहुत से, अंश हैं जो लागू करने में सक्षम नहीं हैं, उपदेश देने में सक्षम नहीं हैं, या उपदेश या शिक्षण का विषय हैं। क्या बाइबल में ऐसे अंश हैं जो अनिवार्य रूप से व्यक्तिगत निर्माण या चर्च के भीतर उपदेश और शिक्षण के संदर्भ में हमारे लिए किसी भी उपयोग की संभावना से बाहर रखे गए हैं? और मेरा झुकाव ना कहने का है।

वस्तुतः ऐसे कोई अंश नहीं हैं जो समसामयिक प्रयोज्यता की पहुंच से परे हों। इसीलिए मैं कहता हूँ कि स्थिति से बंधे अनुच्छेद भी प्रासंगिक हो सकते हैं। हालांकि, इस तरह के मामलों में, प्रासंगिकता, प्रयोज्यता, निश्चित प्रश्न के उत्तर के बजाय तर्कसंगत और निहितार्थ प्रश्नों के उत्तर को लागू करने में होगी।

स्थिति-बद्ध अनुच्छेदों में, यह लगभग हमेशा निश्चित प्रश्न का उत्तर होता है जो सीधे तौर पर लागू नहीं होता है। लेकिन यदि आप जो कहा गया है उसके कारण का पता लगाएं, न कि केवल जो कहा गया है उसका अर्थ, बल्कि जो कहा गया है उसके पीछे का कारण, या निहितार्थ, धार्मिक निहितार्थ, जो इस मार्ग में संप्रेषित किया गया है, तो लगभग हमेशा उत्तर मिलते हैं तर्कसंगत और निहितार्थ प्रश्न सीधे प्रासंगिक हो सकते हैं। अब, निःसंदेह, इसके अलावा, स्थिति से जुड़े अनुच्छेद या शिक्षाएँ उसी स्थिति में लोगों के लिए प्रासंगिक हैं।



पश्चिमी दुनिया में हममें से अधिकांश लोगों के लिए, मैं निश्चित रूप से खुद को पश्चिमी दुनिया में गिनता हूँ; पश्चिमी दुनिया में रहने वाले हममें से अधिकांश लोगों के लिए, मूर्तियों को चढ़ाया गया मांस खाने के संबंध में आदेश प्रासंगिक नहीं हैं। यह प्रासंगिक नहीं है। एक तरह से यह स्थिति-बद्ध है।

इसे अन्य स्थितियों में सीधे तौर पर लागू नहीं किया जा सकता। लेकिन यह सीधे तौर पर उन लोगों के लिए प्रासंगिक है जो ऐसी संस्कृतियों में रहते हैं जहां आप मूर्तियों को मांस चढ़ाना जारी रखते हैं। यह उन जैसे व्यक्तियों से सीधे बात करता है।

अब, बाइबिल मूल्यांकन के साथ-साथ, जिसे हम स्थितिजन्य मूल्यांकन भी कह सकते हैं। इस संबंध में निर्णय लेना महत्वपूर्ण है कि क्या इस परिच्छेद की शिक्षा सीधे हमारे समय में लागू होती है। यह निर्णय लेने के लिए कि हम जिस समसामयिक स्थिति का सामना कर रहे हैं उसका मूल्यांकन करना भी महत्वपूर्ण है कि क्या बाइबिल की शिक्षा और इस समसामयिक स्थिति के बीच प्रयोज्यता सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त अनुरूपता या पत्राचार है।

इसलिए, हमें खुद से पूछने की ज़रूरत है कि समकालीन स्थिति में वास्तव में क्या चल रहा है, जिसके बारे में हम सोचते हैं कि बाइबिल की यह शिक्षा लागू हो सकती है? वास्तव में, यहीं पर कई बार चर्च में प्रचारकों या शिक्षकों को समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति का पता लगाना असामान्य नहीं है जहां चर्च के भीतर एक शिक्षक या उपदेशक व्याख्या, व्याख्या और यहां तक कि बाइबिल का मूल्यांकन भी अच्छी तरह से करेगा, लेकिन इसे समसामयिक स्थिति पर लागू करने में, वह उस समसामयिक स्थिति को गलत समझता है और उस समसामयिक स्थिति को गलत तरीके से पढ़ता है। और यदि ऐसा होता है, तो दुरुपयोग अपरिहार्य है।

जब आप, उदाहरण के लिए, जटिल समसामयिक स्थितियों, जैसे कि इच्छामृत्यु, हथियारों की होड़, युद्ध और शांति, क्लोनिंग, और इस तरह की जटिल समसामयिक परिस्थितियों में बाइबिल की शिक्षा को लागू करने का प्रयास कर रहे हैं, तो यह उन में है मामलों को स्पष्ट रूप से गहराई से समझना बहुत महत्वपूर्ण है ताकि बाइबिल की शिक्षाओं को इस बात से ठीक से जोड़ा जा सके कि इन समसामयिक परिस्थितियों में रहते हुए हमें कैसे सोचना चाहिए और क्या करना चाहिए। लेकिन जब बाइबिल की शिक्षा को अधिक व्यक्तिगत और प्रत्यक्ष प्रकार की स्थितियों में लागू करने की बात आती है, तो मुझे एक अधीक्षक के बारे में सुनना याद आता है, जिसे अपने सम्मेलन के भीतर एक स्थानीय चर्च में पादरी और लोगों के बीच संघर्ष से निपटने के लिए बुलाया गया था। दुर्भाग्य से, उस अधीक्षक ने उस स्थिति की गतिशीलता को बहुत गलत तरीके से पढ़ा और बाइबिल की सच्चाई और बाइबिल की शिक्षाओं को उस स्थिति में गलत तरीके से लागू किया और उस गलत प्रयोज्यता के कारण बहुत अधिक नुकसान किया।

अब, यदि इस प्रकार का मूल्यांकन उचित अनुप्रयोग की ओर ले जाता है, तो कभी-कभी इसे विनियोग के रूप में संदर्भित किया जाता है। कुछ मायनों में, विनियोग अधिक उपयुक्त शब्द है क्योंकि यह एक व्यापक शब्द है। लागू करना अपने साथ व्यवहार के अर्थ भी लेकर आता है।

लेकिन विनियोग व्यापक अर्थ रखता है। यह व्यापक नैतिक और आध्यात्मिक गठन जैसी चीजों का सुझाव देता है, न कि किसी विशेष स्थिति में व्यावहारिक रूप से क्या करने का निर्णय लेना है, विशेष व्यवहार के संबंध में आवश्यक विशिष्ट निर्णयों के खिलाफ सोचने का एक प्रकार का तरीका। तो, विनियोग थोड़ा बेहतर शब्द हो सकता है।

लेकिन फिर भी, जब विनियोग की बात आती है, तो इसमें यह प्रश्न पूछना और उत्तर देना शामिल होता है: वास्तव में इस अनुच्छेद की शिक्षा मेरी समझ और मेरे सामने आने वाली इस समसामयिक स्थिति में मेरे जीवन को कैसे सूचित करती है? वास्तव में इससे क्या फ़र्क पड़ता है कि मैं इस समसामयिक परिस्थिति के बारे में कैसे सोचता हूँ और कैसे रहता हूँ जिसका सामना मैं या मेरी मंडली, मेरा संप्रदाय और मेरा राष्ट्र करता है? अब, यहां कुंजी, मुझे लगता है, विनियोग के इस व्यवसाय में दो कुंजी, दो सिद्धांत हैं। एक पत्राचार का सिद्धांत है। हमें यह सुनिश्चित करने की ज़रूरत है कि बाइबिल शिक्षण और इस समकालीन स्थिति के बीच एक पत्राचार है और उस पत्राचार को उचित रूप से संबंधित करना है।

लेकिन विशिष्टता का सिद्धांत भी . बाइबिल विनियोग में जो होता है वह यह है कि विनियोग बहुत सामान्य तरीके से किया जाता है। जब मैं मदरसा के छात्रों को पढ़ाता हूँ तो वास्तव में मुझे यह बार-बार मिलता है।

जैसे ही मैं उनसे बाइबिल के सत्य को लागू करने की प्रक्रिया के बारे में जाने के लिए कहता हूँ जिसकी उन्होंने व्याख्या की है, वे बहुत व्यापक अनुप्रयोगों के साथ आते हैं, बिल्कुल भी विशिष्ट नहीं। उस प्रकार का व्यापक अनुप्रयोग उपयोगी नहीं है क्योंकि हम बादलों में नहीं रहते हैं। लोग जीवन की विशिष्टताओं के मूल में रहते हैं।

हमें वास्तव में व्यक्तियों के रूप में, मंडली के रूप में, हम सभी को विशिष्ट प्रयोज्यता में अंतर्दृष्टि की आवश्यकता है। हमें तब भी सहायता की आवश्यकता होती है जब हम यह निर्धारित करने के लिए अलग-अलग अनुच्छेदों के साथ काम कर रहे होते हैं कि यह अनुच्छेद कैनन में कैसे कार्य करता है ताकि विशिष्ट तरीकों से उन समस्याओं या चुनौतियों का समाधान किया जा सके जिनका हम आज सामना कर रहे हैं। यदि किसी परिच्छेद के अनुप्रयोग में आप किसी परिच्छेद के अनुप्रयोग के साथ आते हैं, मान लें कि कोई दिया गया परिच्छेद जिस पर आप काम कर रहे हैं, तो वह एक ऐसा अनुप्रयोग हो सकता है जिसे निर्देशित किया जा सकता है, या मुझे कहना चाहिए, सौ अलग-अलग तरीकों से उत्पन्न हो सकता है अन्य अनुच्छेद, आपका आवेदन वास्तव में नहीं किया गया है, वास्तव में पर्याप्त रूप से विशिष्ट नहीं है।

आदर्श रूप से यह पूछना होगा कि एक विशिष्ट तरीके से व्याख्या किए गए इस विशेष मार्ग को विशिष्ट स्थितियों या विशिष्ट निर्णयों पर कैसे लागू किया जा सकता है जो मुझे लेना चाहिए। मैं इन विशेष परिस्थितियों में कैसे रहता हूँ, इस संदर्भ में इस परिच्छेद से क्या फ़र्क पड़ता है? देखें कि यह अनुच्छेद की समृद्धि, बाइबिल सिद्धांत में उस अनुच्छेद की विशिष्टता पर आधारित है। वह अनुच्छेद हमें जो प्रदान करता है वह कोई अन्य अनुच्छेद हमें इस अंतर्दृष्टि के संबंध में प्रदान नहीं कर पाता कि हम अपना जीवन कैसे जीते हैं। और यह हमें अंतर्दृष्टि प्रदान करता है जिसे हम

वास्तव में अभ्यास में ला सकते हैं क्योंकि हम इसे अपने जीवन की विशिष्ट स्थितियों से जोड़ रहे हैं।

इसलिए, मैं छात्रों से आग्रह करता हूँ, जब वे आवेदन की प्रक्रिया के बारे में जाएं, तो अपने जीवन में उन स्थितियों के बारे में सोचें जिन्हें लागू किया जा सकता है या अन्य ईसाइयों के जीवन में ऐसी स्थितियों के बारे में सोचें जिनके बारे में वे जानते हैं कि इसे विशेष रूप से किन पर लागू किया जा सकता है ताकि इससे फर्क पड़े। . जैसा कि आप कहते हैं, इस परिच्छेद और इस परिच्छेद के मेरे अनुप्रयोग के कारण इस स्थिति में मेरा जीवन अलग है। इसलिए, यदि यह परिच्छेद यहाँ नहीं होता, यदि इस विशेष परिच्छेद की विशेष शिक्षा यहाँ कैनन में नहीं होती, तो मेरा जीवन गरीब होता क्योंकि मैं इस स्थिति में जीने की कोशिश करता हूँ जिसका मैं सामना कर रहा हूँ।

वह, फिर से, एक कठिन लक्ष्य है। लेकिन मेरा मानना है कि विनियोग की विशिष्टता के संदर्भ में यह एक योग्य लक्ष्य है। विनियोग के संबंध में बस एक अंतिम शब्द।

व्यावहारिकता से बहुत प्रभावित रही है। क्रिया पर, व्यवहार पर एक प्रकार का जोर। और यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि विनियोग का संबंध केवल व्यवहार से नहीं है।

इसका संबंध सोच से भी है। नया नियम इस बात से बहुत चिंतित है कि हम कैसे सोचते हैं, विचार की प्रक्रियाएँ और विचार की दिशा क्या है। और इसलिए विनियोग इस तक सीमित नहीं होना चाहिए कि हम क्या करते हैं, बल्कि इस पर भी निर्भर होना चाहिए कि हम कैसे सोचते हैं।

वह भी महत्वपूर्ण है। इसे ध्यान में रखने की जरूरत है। मैं यह भी कह सकता हूँ कि उपदेश और शिक्षण के संबंध में, प्रत्यक्ष अनुप्रयोग और अप्रत्यक्ष अनुप्रयोग दोनों होते हैं।

ग्रांट ओसबोर्न, अपनी पुस्तक द हर्मेनेयुटिकल स्पाइरल में, प्रत्यक्ष अनुप्रयोग और अप्रत्यक्ष अनुप्रयोग के बारे में बात करते हैं। वह बताते हैं कि जब भी उपदेश दिया जाता है, तो लोग एक आवेदन देंगे। उपदेशक जो कहता है उसे वे अपने जीवन में लागू करेंगे।

यदि वे वास्तव में सुन रहे हैं या ध्यान दे रहे हैं, तो वे इसे लागू करेंगे। जहाँ तक वे इसे लेते हैं और उपदेश या शिक्षण के आधार पर अनुप्रयोग का कार्य करते हैं, वह अप्रत्यक्ष अनुप्रयोग है। अब, प्रत्यक्ष अनुप्रयोग जैसी कोई चीज़ होती है, और आपके पास यह तब होता है जब उपदेशक या शिक्षक वास्तव में स्पष्ट करता है कि इसका अनुप्रयोगात्मक महत्व क्या होना चाहिए।

इस प्रक्रिया में एक अंश पर उपदेश दें। आप कहते हैं, इस सप्ताह आपके और मेरे जीवन में ऐसा ही दिखेगा जैसा कि हम इसे जी रहे हैं। मेरा एक मित्र है जो विभिन्न आकार के चर्चों में पादरी है, बहुत छोटे चर्चों से लेकर मेरे संप्रदाय के सबसे बड़े चर्च तक, जिसने कुछ साल पहले एक अवसर पर मुझसे कहा था कि एक उपदेश के अंत में, लोगों को उस उपदेश को छोड़ने में सक्षम होना चाहिए कह रहा हूँ, अगले सप्ताह, अगले सप्ताह के भीतर, मैं बता सकता हूँ कि मैंने इस उपदेश को लागू किया है या नहीं। कहने का तात्पर्य यह है कि मैं इस बारे में बिल्कुल स्पष्ट निर्णय ले सकूंगा कि मैंने इसे लागू किया है या नहीं।

उनका कहना है कि यह उपदेशक का दायित्व है कि वह प्रचार की प्रक्रिया में शामिल हो, एक आवेदन करे, लोगों को बताए कि वह आवेदन इस तरह दिखेगा ताकि जब वे उस सेवा को छोड़ दें, तो वे कह सकें अब से सात दिन बाद क्या वास्तव में उन्होंने इसे लागू किया है या नहीं क्योंकि उपदेशक ने उन्हें बताया है कि आवेदन कैसा दिखता है। वह सीधा आवेदन है. ग्रांट ओसबोर्न का सुझाव है कि अप्रत्यक्ष आवेदन वास्तव में अधिक प्रभावी है, क्योंकि इसमें वास्तव में व्यक्ति का स्वामित्व, श्रोता की भागीदारी, उसकी या खुद की भागीदारी शामिल है, जो कि प्रत्यक्ष आवेदन की तुलना में अधिक प्रभावी है।

लेकिन दूसरी ओर, निःसंदेह, कोई यह तर्क दे सकता है कि एक उपदेशक या शिक्षक का दायित्व है कि वह सुझाव दे या बताए कि उस शिक्षण से कौन से संभावित अनुप्रयोग हो सकते हैं जो उस मार्ग के शिक्षण का आधार है जिसका उपदेश दिया जा रहा है या वह सिखाया जा रहा है. मुझे लगता है कि शायद यहां रुकने के लिए यह एक अच्छी जगह है क्योंकि हम वास्तव में विधि की चर्चा से शुरू होकर जेम्स की पुस्तक के अवलोकन और व्याख्या की ओर बढ़ रहे हैं।

यह डॉ. डेविड बोवर आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 15 है, मूल्यांकन और अनुप्रयोग।